

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

बंगालादेश में नारी की दिशा और दशा

डॉ.सोभना जैन*

तसनिमान अपने सम्पूर्ण साहित्य द्वारा बांग्लादेश की स्थिति, वह की धर्मधता, वहाँ की नारी की दशा और दिशापर अपने साहित्य के द्वार प्रकरष डाला हैं। उन्होंने अपने साहित्य में धर्म संप्रदाय, शास्त्र, इतिहास, परंपरा और रूढ़िबंधनो का विरोध किया हैं। नारी के अलग रूपोंका अन्यासरे का, अत्याचारो का, वह घर की बंदिनीर बन कर कितनी दयनीय हैं। उसकी करुणा कथा यथार्थ शैली में चित्रित कर नारी के अनयाय के प्रति आताज उठाने की चुनौती यहा तसनीमा देती है।

उसने अनेकों कविता में नारी शोषण को चित्रण किया है। आज के वैधानिक युग प्रत्येक क्षेत्र में समानता का अधिकार चाहता है। सिर्फ नारी जागरण की आवश्यकता हैं। उसने अपने काव्यो में नारी को प्रेयसी के रूप में अंकित किया हैं। साथ ही उसकी नारी विद्रोही रूप में आज भी आओज गुण से युक्त समजी जाती हैं। वह मानती है की अगर विरोध नहीं किया जाता तो समजी जाती हैं। वह मानती हैं की अगर विरोध नहीं किया जाता तो अन्याय करने वाला जितना दोषी होता हैं उससे ज़्यादा दोषी सहने वाला होता है। इसी कारण नारी संप्रदाय की सुरक्षा की दृष्टि से यह विद्रोह वास्तविक हैं पुरुषो की गलतियाँ स्पष्ट कर धैर्य से उनका मुकाबला करने की क्षमता उसमे हैं। 'प्रेरित नारी' कविता में वह कहती हैं।

"हम हैं प्रकृति की प्रेरित नारिया"

प्रकृति नारी को पुरुष के आधीन नहीं रखती हम में प्रकृति की भेजी हुई स्त्रियाँ।

प्रकृति स्त्रीको स्वर्ग में पुरुषो के पेरों तले नहीं रखती।"बंगाल में आज भी स्त्री को समान उत्तराधिक स्वधिनता नहीं हैं। आज भी वहाँ की स्त्री की स्थिति बहुत ही दयनीय हैं। इसी दयनीयता के कारण तसनीमा कर खून खोल उठता हैं। वह समान अधिकार, समतभाव की वह चाहती हैं। अपनी '1500 बंगाल' कविता में वह बताती हैं की "स्त्री अब चार दीवारी में बंध रहनी नहीं चाहती। धर्म बंधन में जकड़ना भी नहीं चाहती। अपनी कोख की स्वधिनता खोना भी नहीं चाहती। अपनी कोख से तह महान आत्माओ को जन्म देना चाहती है। लड़की के जन्म की छह भी उसे हैं-

*डॉ.सोभना जैन, प्राचार्य आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज पिपलिया

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

"निश्चित ही वह मांग सकती हैं समान उत्तराधिकार
निश्चित ही वह मांग सकती हैं शिक्षा, स्वस्थ, सन्मान
निश्चित ही वह मांग सकती हैं कोख की स्वधिनता लड़की का जन्म"

सलीमा को लिए हुए फा में सलमान रुशिद लिखते हैं "मुस्लिम देशों में नौकरियों में भी औरतों को कई प्रकार के शोषण का शिकार होना पड़ता है। उसके अलावा हर घर में औरतों के दमन के असंख्य उदाहरण मिलेंगे। कई देशों में कानून भी स्त्री पुरुषों के बीच बराबरी को व्यवहार नहीं करता। वहाँ किसी पुरुष की गवाही औरत की गवाही से ज़्यादा विश्वसनीय समझी जाती है।"

तसलीमा को दृष्टिकोण कोरा भावात्मक नहीं है। उसमें सारतत्व समाया है। नारी जागरण का जो शंख बजाया है उसमें त्याग सेना नहीं है। तो अपने अधिकारों पर अधिकार स्थापित करने की क्षमता है। वही स्त्री अंतर्जगत का उच्चतम विकास चाहती है।

इन सभी बातों को देखकर तसलीमा की रचनाओं को पढ़कर यूरोप-अमेरिका के प्रबद्ध लोगों में जो प्रतिक्रिया हुई उसी का प्रमाण तसलीमा को लिखी चिट्ठियों के एक फ्रांसीसी संकलन का यह बांग्ला अनुवाद है। इसकी भूमिका में अनन्दा शंकर राय लिखते हैं कि "इसे पढ़कर मौजे लगता है कि तसलीमा ही अकेली ऐसी मुसलमान लेखिका हैं जिन की तुलना सलमान रुशिद से की जा सकती है। तसलीमा की चिन्ता सामाजिक परिवर्तन के सिलसिले में है। उनकी रचनाओं को मुख्य उद्देश्य यही है।"

तसलीमा कहती हैं कि क्रूरकर्म पुरुषों ने उसे केवल वासना का शिकार बनवाया है। पुरुष को वासना का शिकार बनवाया है। पुरुष की वासना की वेदी पर धीरतम बल देने वाली नारियों को समाज ने "वेश्या" समाज है। समाज से तिरस्कृत इन नारियों के व्यथा-कथा को तसरन माने स्पष्ट किया है। वह बताना चाहती हैं कि पुरुष ने हमेशा नारी को वासना की दृष्टि से देखा है। फिर भी स्त्री उनके प्रति इतनी विनम्र क्यों? ऐसा सवाल भी उसने उठाया है। इसी कारण अनन्दा शंकराय कहते हैं- 'तसलीमा के एक यंग एंग्री वुमेन' कहा जा सकता है। उनके जैसी एंग्री यंग वुमेन बांग्लादेश में तो हैं ही नहीं सम्पूर्ण इसनामिक देशों में भी कही होगी इसमें संदेह है। इसलिए एंग्री ओल्ड मेन जैसों के साथ उनका संघर्ष अवश्य भावी है।"

तसलीमा नसरीन नारी को सजग बनने का इशारा किया है। पुरुष शोषण पर वह करारा घा करती है। उसके प्रति वह आवाज उठाती है। वह कहती है कि इस क्षणभंगुर जीवन

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

में पुरुष स्त्री को प्यार नहीं दे पाएगा? जो स्त्री चाहती हैं- वह नींद उड़ानेवाली कविता में कहती हैं स्त्री को सजग बनने का इशारा किया हैं-

'उनके बारे में कभी मन सोचा,

वे मनुष्य नहीं, पुरुष हैं?

औरत तुम ज़िंदा रहो बची रहो।"

बैला सच्चार लिखती है- "मुझे लगता है तसलीमा नज़रिन के देश में अकेली माहिरण होना बेहद असुरक्षित मौत का खतरा उठाने के समान हैं। बांग्लादेश में पुरुष समाजवादी व्यवस्था और इस्लाम एक साथ मिलकर औरतों पर तरह के धार्मिक और जैविक नियमों को बोज लड़ते जा रहा है। उन अपने अस्तित्व की रक्षा और स्त्रीओं के सम्पूर्ण अधिकारों की रक्षा के लिए साहित्य और डाक्टरों को चुना हैं। कुरान के निर्देशों की वह इसलिए अवज्ञा करती हैं क्योंकि वे स्त्रियों को जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज में बराबर का भागीदार नहीं बनती।"

गरीबी के कारण देश की आर्थिक स्थिति के करुणाजनक चित्रों के कारण शोषण के शिकंजे में नारी एवं असमानता का विचारक दृश्य चिंताजनक हैं। "सबसे पहले करनी होगी दूर, सोच की गरीबी वरना जानवरों से ज्यादा कीमती नहीं होता मनुष्य का जीवन।"

उनके इन विचारों को देखकर नाडीन गार्डियर अपने पत्र में लिखती हैं "आपको विचार धारा और उसे अधिकतम करने के अधिकार का मैं पूरा समर्थन करती हूँ। आपकी दृढ़ चारित्रिक शक्ति और तिष्णा चिंतन शक्ति आपको इस परिक्षेता में भरपूर मदद करूंगी जिसमें आपके लेखकित्व वयक्तित्व और नारीत्व को कब दाँव पर लगा दिया गया है।"

तसलीमा अति संवेदनशील, जागरूक सजग साहित्यकार हैं। वह स्त्री शोषण का विरोध कर स्त्री को मनुष्य बनकर रहने की प्रेरणा देती हैं। स्त्री के अंतर्जगत का उच्चतम विकास वह चाहती हैं। स्त्री के समान अधिकारों को वह चाहती हैं। तभी तो सृजन संराग उन्हें लिखती हैं "मैं आपके शरीर संशोधन की मांग का समर्थन करती हूँ। अर्थात् मैं मानव जाती के उस अक्षदांश की स्वतन्त्रता की मांग करती हूँ, जिसके अंतर्गत हम दोनों ही हैं। बांग्लादेश में जब तक स्त्रीओं की हालत नहीं सुधरेगी तब तक वह पर नारी प्रारूप की समान मर्यादा का समाज नहीं बनेगा। फाक समदर्शी पश्तपतहिन समाज का गठन संभव नहीं होगा।"

धार्मिक आदेम्बर सांप्रदायिक भेदभाव तसलीमा को पसंद नहीं है। वह धर्म का दूसरा नाम मानवता मानती हैं। वह मानती हैं की बांग्लादेश में जो समाज में असंगतियाँ विरोधाभास, वर्गभेद, सांप्रदायिक भेद यह सब उसके विकास में बाधक हैं। इन विचारों को

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

देखते हुए सदा इवेकोविच अपने पत्र में लिखती हैं। "आप घृणा, जातिभेद, धर्म और तमाम विशमताओं के विरुद्ध आप लड़ रही हैं। मैं इन दातों को जानकार बेहद दुश्चित में हूँ। कट्टर पंथियों का पहला कम स्त्रियों द्वारा अर्जित थोड़े अधिकार से भी उन्हें वंचित करना है। वे स्त्रीओं पर निरंतर अत्याचार करने के हिमायती हैं। ऐसी घटनाएँ उन सभी देशों में नज़र आ रही हैं "जटों की स्त्रियों थोड़े अधिकार हासिल कर चुकी हैं। नारी के अधिकार और मर्यादा को प्रतिकृत करने के लिए आप जैसी लेखिका और हर नागरिकों के बिना किसी बाध्य के अपनी बात रखने की आज़ादी ही आपका उद्देश्य है।"

तसलीमा नसरिता धार्मिक कट्टरता का विरोध करती हैं। वह नारी स्वतंत्र्य के लिए आवाज़ उठाने की और धर्म के ठेकेदारों से टक्कर लेने वाले स्त्री लिखिका हैं। आपने जो नारी मुक्ति के लिए आवाज़ उठाई है। वह मानवमुक्ति में परिवर्तित हो जाती हैं। समस्त विश्व की दमित शोषित नारी के साथ आप की संवदिता है। आपका साहित्य 'मैं वेदना, तड़प नारी की अवहेलना के प्रति सजग करता है।

पियेर मेर्तेन्स लिखते हैं-

"नारी ज्ञानी और विद्रोही,

नारी मुक्त सुंदरतम,

तभी एक पुरुष बनता है बम और,

नारी बन जाती है गोला बारूद"

एक ऐसी नारी जिसने सारी सुनिया की गोपनियता बातों को शब्दों के जरिए क्रमबद्ध किया।"

तसलीमा के साथ के लोग जिस बात की कभी कल्पना नहीं कर पाये वह उन्होंने आज करके दिखाया है। लिखना-पढ़ना, समजना, बहस करना, जितना जिस बातको कोई और करने का साहस हो नहीं जूटा पायी। उसे उन्होंने कहा वह इसलिए नितांत अकेली है। आपने ठाका मेडिकल कॉलेज में डॉक्टर का कम संभालते हुए साथ में साहित्य लेखन द्वारा नारी की समस्या खास करके बांग्लादेश में धर्म के ठेकेदारों के कारण नारी की स्थितिपर आप लिख रही थी। आपने समाज स्त्री इन पर आपके अनुभवों पर लेखन के नाते आप सम्पूर्ण विश्व में चर्चित हुई। सम्पूर्ण ऐसे ही बात इयेओर आपको पत्र लिखा है। आप असंख्य नारियों के साथ उनकी शक्ति में समरस हुई हैं। ये अभागी नारियां निरंतर खामोश होकर अपनी बली देती रहती हैं और बिना किसी प्रतिवाद के अपने भाग्य को मन लेती हैं, आपने उनकी भावनाओं और मुफ़ शिकायत को समजा है। आपने मुह फेरकर उदारीता नहीं बल्कि उन

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

शिकायतों को बरसक अपनी शक्ति से ग्रहण किया हैं। अपने लेखन में उसी कष्ट और मंत्रणा की अभिव्यक्ति के लिए आप भी उसी वजह की भागीदार बन गयी हैं। सामाजिक संरचना से घृन कुसंस्कार तथा अंध विश्वास को उखाड़कर आपने स्वस्थ समाज गठने की कोशिश की है। अतीत या वर्तमान युग में भक्ति स्वधिनता की रक्षा में अपना जीवन दाँव पर लगाने को बाध्य हुई है।

"नसरीन का साहित्य केवल बांग्लादेश तक सीमित न होकर समान समस्याओं से ग्रस्त समूचे भारतीय खंड से गुजरता हुआ सम्पूर्ण विश्व का साहित्य बनता हैं। उनका नारी मुक्त का स्वर मानव मुक्ति के लिए उद्घोषित होता है। आप मजहब का दूसरा नाम इंसानियत मानती हैं। इंसान की ताकत और हिम्मत पर विश्वास रखती है।"

नारी सौन्दर्य का वर्णन वह प्रेयसी, माता, पत्नी, माँ, बेटी सब रूप में करती है। वेश्या के रूप में अपना कर्तव्य निभाती हुई स्त्री का वर्णन भी उन्होंने किया हैं। नारी का सामान्य रूप वासना युक्त समजा जाता हैं और उसका शोषण किया जाता हैं जिसे तसलीमा धिक्कारती हैं और नारी को सजग बनने की प्रेरणा देती हैं।

"बाजारी औरत से कहती हूँ ज़िंदा रहो
एयर कंडीशंस कमरे में जेवरो से कदी-पफदी
दुखियारी औरत से कटति हैं ज़िंदा रहो,
औरत तुम ज़िंदा रहो बची रहो।"

ऐलिफ़ड़ा येकिनेन ने पत्र में लिखा हैं - तसलीमा आप मूल्यवान हैं। आपका जीवन मूल्य है। मैं आपको श्रद्धा करती हूँ। आप सत्यभाषिणी हैं।"

वह औरत को इंसान बनकर रहने का संदेश देती हैं। नारी शोषण का करुण चित्रण उन्होंने अपने साहित्य में किया हैं। वह नारी की करुणा का बीभत्सपूर्ण चित्रण करती हैं "नौचा खसोरा शरीर लेकर वह दरवाजे पर खड़ी हो जाए तो क्या उसकी शोकातर माँ स्नेह और सेवा भाव से स्पर्श करेगी?"